www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-3* *March 2025***

चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताएंः हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के सन्दर्भ में

मोहम्मद आकिफ तौफीक

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महिला महाविद्यालय औराई, भदोही, शोध–छात्र, राजनीति विज्ञान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी

डॉ0 शमीम राईन

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, सकलडीहा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चन्दौली

सार–संक्षेप

हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर पश्चिमी प्रशांत महासागर तक विस्तृत है। अर्थात यह क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिम से लेकर अमेरिका के पश्चिमी तट तक विस्तृत है। मूल रूप से यह शब्द एक मैरीटाइम क्षेत्र को इंगित करता है जिसमें मैरीटाइम सुरक्षा, सहयोग एवं शांति का विचार निहित है। यह शब्द एशिया–प्रशान्त की तुलना में अत्यधिक मैरीटाइम उन्मुख है। यह शब्द इन दो महासागरों की परिधि में स्थित राष्ट्रों की परम्परागत आर्थिक निर्भरता को भी प्रकट करता है। हिन्द–प्रशान्त के उपक्षेत्रों में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिंताएं भिन्न हैं। जहां पश्चिमी प्रशान्त में चीन अपने संप्रभुतागत मैरीटाइम दावों, मैरीटाइम अधिकारों, मैरीटाइम हितों, मैरीटाइम संसाधनों के स्वामित्व, ताइवान का चीन की मुख्य भूमि में एकीकरण और अमेरिका की अग्रिम नौसैन्य उपस्थित को लेकर चिंतित है। वहीं हिन्द महासागर में चीन की चिंता अपने आर्थिक विकास की गति को स्थायी रखने हेतु ऊर्जा संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति एवं निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था की अबाधित वैश्विक पहुंच को सुनिश्चित करने हेतु नौपरिवहन की स्वतंत्रता अर्थात स्लाक्स की सुरक्षा पर केंद्रित है। क्योंकि चीन का अधिकतर ऊर्जा आयात एवं विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात हिन्द महासागर में उसकी नौपरिवहन की स्वतंत्रता अर्थात स्लाक्स की सुरक्षा पर निर्भर है। अतः पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति अमेरीका की उपस्थिति एवं प्रभाव को प्रतिस्थापित अथवा शून्य करना है। वहीं हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति भारत के परम्परागत प्रभाव को कम करके उसे अपने प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित करना है। अर्थात जहां पस्चिमी प्रशान्त क्षेत्र में चीन एवं अमेरिका के बीच में एक प्रकार की नौसैन्य प्रतिस्पर्धा नज़र आ रही है। वहीं हिन्द महासागर में चीन, भारत के परम्परागत शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने एवं उसे अपने प्रभाव के क्षेत्र में बदलने के प्रयास कर रहा है। चीन मोती की माला रणनीति द्वारा भारत को चारों ओर से घेरने का प्रयास कर रहा है। भारत एवं चीन के मध्य स्थल सीमा विवाद एवं उत्तरी हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती नौसैन्य उपस्थिति भारत–चीन सम्बन्धों में एक दुविधा की स्थिति नज़र आती है। इस शोधपत्र में हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताओं को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है। यह शोध–पत्र चीन की नौसैन्य क्षमता में अभिवृद्धि के कारण हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में उसके मैरीटाइम व्यवहार की व्याख्या पर केंद्रित है। क्योंकि चीन की आर्थिक शक्ति में वृद्धि के साथ उसकी नौसैन्य क्षमता में अभिवृद्धि के लिए आधुनिकीकरण के प्रयासों में वृद्धि हुई है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं में निरंतरता एवं परिवर्तन के लक्षण प्रकट होते है। प्रस्तुत शोध–पत्र में हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिंताओं, प्राथमिकताओं, महत्त्वाकांक्षाओं को भी पता लगाने का प्रयास किया गया है।

शब्द कुंजी– मैरीटाइम सुरक्षा, संप्रभुतागत विवाद, मैरीटाइम प्रतिस्पर्धा, मलक्का की दुविधा, सुदूर समुद्र संरक्षण, आर्थिक–संवृद्धि, न्यूनतम निवारण क्षमता, शक्ति–प्रदर्शन, नौपरिवहन की स्वतंत्रता, नील जल सेना, अग्रिम उपस्थिति, भूभागीय एकीकरण, भारत केन्द्रित, परम्परागत प्रभाव क्षेत्र, मोती की माला।

हिन्द–प्रशांत शब्द सर्वप्रथम गुरूप्रीत एस० खुराना द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसके बाद हिन्द–प्रशान्त शब्द का प्रयोग जापान के प्रधानमंत्री शिंजो ऐबे ने भारतीय संसद में अपने अभिभाषण में किया था। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी अपनी एशिया की यात्रा के समय इस शब्द को प्रयुक्त किया था। परम्परागत रूप में हिन्द–प्रशांत क्षेत्र का विस्तार अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर पश्चिमी प्रशांत महासागर तक विस्तृत माना जाता है। अर्थात हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिम से लेकर अमेरिका के पश्चिमी तट तक विस्तृत है। इस क्षेत्र में विश्व की आधी से भी अधिक जनसंख्या निवास करती है। यह क्षेत्र वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र एवं निर्धारक है। क्योंकि विश्व की उभरती बड़ी अर्थव्यवस्थाएं इसी क्षेत्र में स्थित हैं। वैश्विक व्यापार के महत्वपूर्ण जलमार्ग अर्थात स्लाक्स और चोकप्वांट्स इसी क्षेत्र में स्थित हैं। विश्व की व्यापारिक सामग्री आपूर्ति का एक तिहाई हिस्सा इसी क्षेत्र से गुजरता है। नवोदित अर्थव्यवस्थाओं के वैश्विक प्रभाव के कारण यह कहा जाता है कि सम्पूर्ण वैश्विक आर्थिक गतिविधियां अटलांटिक महासागर क्षेत्र से हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में विस्थापित हो गयी हैं। विश्व की महत्वपूर्ण जलसन्धियां बाब–अल–मंदेब, होरमुज़, मलक्का, सुंडा, लोम्बोक इसी क्षेत्र में स्थित हैं। परंतु हिन्द–प्रशान्त की परिधि क्षेत्र के राष्ट्रों के मध्य लगभग चालीस से अधिक परम्परागत मैरीटाइम विवाद हैं। यह विवाद समुद्री भूभागों, द्वीपों पर संप्रभुतगत अधिकार और मैरीटाइम प्राकृतिक संसाधनों पर स्वामित्व को लेकर परस्पर विरोधी दावों के कारण हैं। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में गैर–परंपरागत मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों जैसे पायरेसी, समुद्री डकैती,स्मगलिंग, आतंकवादी घटनाओं, मानवता के विनाश के हथियारों की अवैध आपूर्ति और गैर–राज्य अभिकर्ताओं की बढ़ती गतिविधियों से भी प्रभावित हैं।

हिन्द–प्रशान्त शब्द प्राथमिक रूप से एक मैरीटाइम भू–क्षेत्र को प्रदर्शित करता है जिसमें मैरीटाइम सुरक्षा और सहयोग का विचार निहित है। यह शब्द एशिया–प्रशांत की तुलना में अत्यधिक मैरीटाइम उन्मुख है। यह शब्द इन दो महासागरों के लाइटोरल में स्थित राष्ट्रों की पारस्परिक आर्थिक निर्भरता को प्रकट करता है। हिन्द–प्रशान्त शब्द एक एकीकृत विचार को प्रकट करता है। जिसमें हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर की परिधि में स्थित राष्ट्रों को शामिल किया जाता है। यह क्षेत्र रणनीतिक महत्व के साथ–साथ आर्थिक महत्व भी रखता है। जिसमें विश्व की नवोदित बड़ी अर्थव्यवस्थाएं एवं महत्वपूर्ण चोकप्वांट्स समर्थित हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के नौपरिवहन हेतु आवश्यक स्लाक्स उत्तरी हिन्द महासागर के लाइटोरल क्षेत्र से गुजरते हुए प्रशांत महासागर के महत्त्वपूर्ण तटीय आर्थिक केन्द्रों को जोड़ती हैं। चीन द्वारा एशिया–प्रशान्त क्षेत्र का अनुवाद एशिया अर्थात चीन और प्रशान्त अर्थात अमेरिका के रूप में किया जाता रहा है। हिन्द– प्रशांत में जो प्रशान्त शब्द का प्रयोग है उसमें पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर, पीला सागर आते हैं। जिनको चीन अपना अभिन्न अंग मानता है। इन क्षेत्रों में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ता अपने पड़ोसियों के साथ परस्पर विरोधी मैरीटाइम दावे हैं। चीन की बढ़ती आर्थिक शक्ति और नौसैन्य क्षमता में विस्तार को लेकर चीन की मैरीटाइम परिधि में स्थित छोटे पड़ोसी राष्ट्र इस बात को लेकर चिंतित हैं कि चीन इन चुनौतियों का प्रतिउत्तर कैसे देगा, चीन की नौसैन्य क्षमता का इन राष्ट्रों पर क्या असर पड़ेगा और क्या अमरीका अपने गठबन्धन दायित्व का निर्वहन कर सकेगा। चीन की मान्यता है कि हिन्द–प्रशान्त शब्द अमेरिकी प्रभुत्व के पराभव को प्रकट करता है। क्योंकि अमरीका चीन के सीमितिकरण हेतु नवोदित राष्ट्रों के साथ एक रणनीतिक गठबंधन बनाने की रणनीति पर केंद्रित है। चीन हिन्द–प्रशान्त शब्द को व्यापार युद्ध के रूप में भी देखता है। हिन्द–प्रशान्त शब्द के अन्तर्गत दक्षिण एशिया के तटीय क्षेत्रों को भी शामिल किया जाता है।

हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में भारत से लेकर दक्षिण पूर्वी एशिया एवं पूर्वी एशिया का समूचा भू–क्षेत्र और पूर्वी हिन्द महासागर से लेकर मलक्का जलसंधि एवं दक्षिणी चीन सागर तक का संपूर्ण जल क्षेत्र आता है। यह शब्द चीन द्वारा अपने निकट के क्षेत्र में अमरीका की अग्रिम उपस्थिति की नीति के विरोध का परिणाम है। क्योंकि चीन इस क्षेत्र में प्रभुत्वशाली शक्ति बनने के लिए अमेरिका की उपस्थिति को कमजोर करना चाहता है। जिसका मुख्य कारण पश्चिमी प्रशांत में चीन के संप्रभुता से जुड़े भूभागीय दावे और ताइवान का चीन की मुख्य भूमि में एकीकरण का प्रश्न है जिन पर चीन का अमरीका के रणनीतिक सुरक्षा सहयोगियों के साथ विवाद है। अमरीका की अपने सहयोगियों के प्रति सैन्य सुरक्षा प्रतिबद्धता उसे चीन के विरुद्ध खड़ा कर सकती है। जिससे

हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र की शान्ति एवं स्थिरता को संकट उत्पन्न हो सकता है। इसी कारण चीन नौसैन्य आधुनिकीकरण द्वारा अर्जित क्षमता को अमरीका के प्रभुत्व को शून्य अथवा प्रतिस्थापित करना चाहता है। चीन के आधिकारिक सुरक्षा प्रलेखों में भी संप्रभुतागत मैरीटाइम दावों को लेकर सैन्य प्रयोग के विकल्प को प्राथमिकता दी जाती रही है। चीन ताइवान को अपनी मुख्य भूमि में एकीकरण को लेकर चिंतित है क्योंकि यह उसके चीन के पुनरोदय अभियान की अनिवार्य आवश्यकता है। परन्तु ताइवान एवं अमेरिका के मध्य सुरक्षा समझौता जहां एक ओर उसको स्वतंत्रता की ओर उन्मुख करता है। वहीं दूसरी ओर चीन एवं अमरीका के मध्य टकराव की सम्भावना को जन्म देता है। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में अमरीका एवं चीन के मध्य एक प्रतिस्पर्धा की स्थिति है। क्योंकि ताइवान का एकीकरण चीन के साम्यवादी शासन की वैधता का प्रमुख स्त्रोत है। वहीं ताइवान और अमेरिका के बीच सुरक्षा समझौते के कारण यह अमरीका के सुरक्षा दायित्व का अभिन्न अंग है। चीन के आर्थिक विकास की गति में निरन्तरता ने उसको एक मैरीटाइम विश्व शक्ति बनने की ओर भी अग्रसर किया है। हिन्द–प्रशान्त केवल एक भौगोलिक शब्दावली नहीं है। जो हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर की परिधि में स्थित राष्ट्रों को सम्मिलित करता है। बल्कि यह शब्द एक विस्तृत रणनीतिक और आर्थिक परिक्षेत्र को भी प्रकट करता है। जिसमें एक प्रकार की मैरीटाइम प्रतिस्पर्धा निहित है। क्योंकि इस क्षेत्र में अमेरिका, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, वियतनाम, फिलिपींस, सिंगापुर, भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसे मुख्य राष्ट्र हैं। यह सभी राष्ट्र एक रणनीतिक खेल का अहम हिस्सा हैं। जिसमें वह अपने निकट के समुद्री भूभाग को नौसैन्य आधुनिकीकरण द्वारा अपनी नौसैन्य क्षमता का संवर्धन करके अपनी नौसैन्य शक्ति का प्रयोग करना चाहते हैं। इस क्षेत्र को अपने प्रभाव के अधीन लाना चाहते हैं। अथवा किसी बाह्य प्रतिस्पर्धी शक्ति के प्रभाव को शून्य करना चाहते हैं। इनके मध्य संप्रभुतागत परस्पर विरोधी दावों के साथ–साथ समुद्री संसाधनों पर स्वामित्व के अधिकार को लेकर परस्पर विरोधी दावे एवं व्यापक मतभेद हैं। चीन एक ऐसा राष्ट्र है जो मैरीटाइम विश्व शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा रखता है। और हिन्द–प्रशांत क्षेत्र पर प्रभुत्व के खेल पर विजय अर्जित करना चाहता है। एक ऐसी वैश्विक मैरीटाइम महान शक्ति बनना चाहता है जो मैरीटाइम तकनीक में उन्नत, सक्षम और एक विश्व स्तरीय नौसेना रखता हो।

जहां तक मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के अर्थ का प्रश्न है। यह किसी राष्ट्र की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का उपवर्ग माना जाता है क्योंकि मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के पीछे किसी राष्ट्र के समुद्री हितों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय शक्ति के प्रयोग का विचार निहित होता है। अर्थात मैरीटाइम डोमेन में राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखने के लिए एक राष्ट्र के प्रयासों को मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति कहा जाता है। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति की विशेषता यह है कि इसमें आर्थिक और सैन्य दोनों तत्वों को शामिल किया जाता है। अर्थात मैरीटाइम हितों एवं अधिकारों की सुरक्षा, मैरीटाइम व्यापार की सुरक्षा और संरक्षण, मैरीटाइम संसाधनों पर स्वामित्व की आकांक्षा, मैरीटाइम भूभागीय दावों की सुरक्षा, भूभागीय लाइटोरल, तटों, अपतटों, द्वीपीय क्षेत्र, ऑफ शोर एरिया, आइसलैंड क्षेत्र, समुद्र से संबंधित क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे, समुद्र के अंदर की भूमि, समुद्र के ऊपर का क्षेत्र सभी कुछ मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के अंतर्गत शामिल किया जाता है। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के उद्देश्यों की पूर्ति सामान्यतः किसी राष्ट्र की नौसेना करती है। परंतु मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति में केवल नौसैन्य गतिविधियां ही शामिल नहीं होती हैं। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति और नौसैन्य रणनीति में अंतर होता है। अल्फ्रेड टेलर महान के शब्दों में मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति, नौसैन्य रणनीति और नौसैन्य क्षमता द्वारा कोई राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों, अधिकारों, प्राथमिकताओं, महत्त्वाकांक्षाओं और उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधारण उपाय करता है। जूलियन कॉर्बेट के शब्दों में नौसैन्य रणनीति–फ्लीट के आवागमन अर्थात नौपरिवहन की स्वतंत्रता को इंगित करती है। जबकि मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति फ्लीट अर्थात नौपरिवहन की दिशा को निर्धारित करती है। फ्लीट के आवागमन अर्थात नौपरिवहन की स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए उपस्थित तंत्र को निर्देशित करती है। नौसेना क्या भूमिका निर्वहन करेगी, उसके कार्य की दिशा क्या होगी, यह सब कुछ मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति से तय होता है। जबकि नौसैन्य रणनीति इन मैरीटाइम लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक नौसैन्य क्षमता के संवर्द्धन पर केंद्रित होती है। इस प्रकार समुद्री तट रेखा के सहारे एवं उससे सुदूर जाकर अपने राष्ट्रीय हितों एवं अधिकारों की रक्षा, मैरीटाइम राष्ट्रीय संप्रभुता के संरक्षण हेतु शक्ति के प्रयोग के एक साधन के रूप में मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति को परिभाषित किया जा सकता है। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति को केवल नौसैन्य रणनीति या नौसैन्य क्षभता संवर्द्धन के मामलों तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के तीन प्रमुख तत्व–समुद्र निवारण, समुद्र नियंत्रण और शक्ति प्रदर्शन हैं। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति को राष्ट्रीय सुरक्षा के विस्तृत मुद्दों से जोड़कर देखा जा सकता है।

मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति के अन्तर्गत किसी राज्य के द्वारा समुद्री हितों की रक्षा, समुद्री व्यापार के संरक्षण, समुद्री संसाधनों की प्राप्ति हेतु किये जाने वाले सभी प्रयासों को शामिल किया जाता है जिसमें विशेष आर्थिक क्षेत्र में दूसरे राज्यों की गतिविधियों, तटीय सुरक्षा, अपतटीय सुरक्षा, अपतटीय वास्तविक सुरक्षा, अपतटीय द्वीपों की सुरक्षा और ऐसे वैश्विक मुद्दों जो समुद्र की गतिविधियों से संबंधित होते हैं। मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति एक विशिष्ट एवं व्यापक दिशा है जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े सभी समुद्री मामले शामिल होते हैं। आज मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति का विचार केवल समुद्र से आगे जाकर समुद्र के ऊपर, समुद्र के नीचे स्थित संसाधनों के स्वामित्व एवं नियंत्रण के दावों पर केंद्रित हो गया है। ऐसी मैरीटाइम गतिविधियों को नियंत्रित करने से है जो एक देश की अर्थव्यवस्था, उसके विकास की दिशा और उसके लिए आवश्यक वैश्विक नौपरिवहन की स्वतंत्रता को सुरक्षित करना होता है। इस प्रकार मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति एक राष्ट्र की राष्ट्रीय नौसैन्य क्षमता संवर्द्धन और उसके समक्ष उपस्थित परम्परागत एवं गैर—परंपरागत मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों से निपटने हेतु घरेलू नेतृत्व द्वारा निर्मित सुरक्षा नीतियों से निर्धारित होती है।

चीन एशिया महाद्वीप की मुख्य भूमि के मध्य से समीप, उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व के अन्तिम छोर और प्रशांत महासागर के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। जिसका अधिकांश हिस्सा भूभागीय है जिसकी लम्बी समुद्री तटरेखा है। अर्थात चीन महाद्वीपीय और महासागरीय विशेषताओं से युक्त राष्ट्र है। चीन को हम महाद्वीपीय सहसमुद्र राष्ट्र भी कह सकते हैं। चीन की लम्बी समुद्री तटरेखा है। जिसके निकट हज़ारों छोटे द्वीपसमूह हैं। चीन का मैरीटाइम भूगोल अपेक्षाकृत प्रतिकूल है। क्योंकि चीन का उसके तट के समीप और विपरात के लगभग सभी मैरीटाइम पड़ोसियों के साथ मैरीटाइम भूभागीय विवाद है। इस कारण चीन द्वारा समुद्र की ओर प्रगतिशील, आक्रामक, संशोधनवादी, यथास्थिति विरोधी प्रयासों पर पड़ोसी देश चिंता प्रकट करते हैं। चीन के बढ़ते प्रयासों को संतुलित करने हेतु अमेरिका से रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने में प्रयासरत रहते हैं। चीन का आधिकारिक समुद्र क्षेत्र अत्यधिक सीमित और अपर्याप्त है। इस कारण वह अपने आर्थिक विकास की मैरीटाइम आवश्यकताओं को संतुष्ट नहीं कर सकता है। चीन मैरीटाइम भूगोल के संदर्भ में अपेक्षाकृत अलाभकारी राष्ट्र होते हुए भी अपने आर्थिक विकास से जुड़े अनेक कार्यो और मैरीटाइम अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों की पूर्ति करता है। चीन की महाद्वीपीय देश की प्रवृत्ति होते हुए भी उसके व्यापार भागीदार राष्ट्रों की संख्या में अभिवृद्धि और समुद्री व्यापार पर उसकी निर्भरता उसको मैरीटाइम महान शक्ति बनने की ओर प्रेरित करती है। चीन भौगोलिक रूप से हानि की स्थिति में है क्योंकि चीन के पास एक भीड़युक्त पड़ोस है। अर्थात चीन के कुल पड़ोसियों की संख्या 22 है। चीन 14 पड़ोसियों के साथ स्थलीय भूमि सीमा एवं 8 पड़ोसियों के साथ मैरीटाइम सीमा साझा करता है। परिणामस्वरूप चीन के राष्ट्रीय हितों को सीधी स्थलीय एवं मैरीटाइम सुरक्षा चुनौती एवं संघर्ष की प्रबल सम्भावना बनी रहती है। जिससे चीन पर एक तरह का रणनीतिक दबाव बना रहता है। यद्यपि चीन अपने अधिकतर भूमि सीमा विवादों का समाधान कर चुका है फिर भी भारत, भूटान और वियतनाम के साथ अनिर्णित सीमा विवाद चीन के परिधीय क्षेत्र की शान्ति एवं स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा है। चीन के निकट में पूर्वी एशिया का भूगोल युद्ध एवं अशांति की संभावना को कायम रखता है। अनेक द्वीपीय भूभागों के स्वामित्व को लेखर परस्पर विरोधी मैरीटाइम दावों के कारण पूर्वी एशिया की मैरीटाइम राजनीति को शान्ति एवं स्थायित्व प्रदान करना एक बड़ी चुनौती है। चीन अपनी परिधि के निकट पड़ोसियों के साथ एतिहासिक संप्रभुतागत दावों और अनिर्णित राष्ट्रीय हितों से जुड़े मुद्दे अपने स्वभाव में मैरीटाइम हैं। चीन के पूर्वी तट पर उसके महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र स्थित हैं। यह आर्थिक केन्द्र समुद्री हमलों की परिधि में आते हैं। चीन का समुद्र की ओर उन्मुखीकरण उसकी आर्थिक गतिविधियों, निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था और आर्थिक विकास की गति को अबाधित रखने हेतु ऊर्जा आवश्यकताओं के आयात पर निर्भरता का परिणाम है। चीन का आर्थिक विकास उसके साम्यवादी शासन की वैधता की गारंटी है। ऊर्जा आयात और विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात की अबाधित आपूर्ति नौपरिवहन की स्वतंत्रता पर निर्भर है। अतः स्लाक्स की सुरक्षा और स्लाक्स के सहारे नौसैन्य सुविधाओं का निर्माण उसकी सुदूर समुद्र संरक्षण की मैरीटाइम रणनीति का अभिन्न अंग है।

शीतयुद्ध के बाद चीन के समक्ष स्थल की तुलना में समुद्री चुनौतियां अधिक हैं। क्योंकि चीन के महत्वपूर्ण आर्थिक केन्द्र तटीय क्षेत्रों में स्थित हैं और समुद्री हमलों की परिधि में आते हैं। समुद्र आधारित व्यापार चीन की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। निकट के समुद्र में चीन की मैरीटाइम महत्वाकांक्षा को सबसे बड़ी चुनौती अमरीका और उसके गठबन्धन सहयोगियों से है। क्योंकि चीन का पूर्वी चीन सागर (सेनकाकू और दियाआऊ)

और दक्षिणी चीन सागर (स्प्रैटले और पैरासेल) के द्वीपों के स्वामित्व, मैरीटाइम संसाधनों के उत्खनन और मत्स्यन के प्रयासों को लेकर परस्पर विरोधी मैरीटाइम दावों के कारण गहरा विवाद है। अमरीका की अग्रिम उपस्थिति इस स्थिति को और जटिल बना देती है। ताइवान की स्वतंत्रता और ताइवान का चीन की मुख्य भूमि में एकीकरण रेज्युनेशन आफ चाइनीज नेशन की अनिवार्य शर्त है। और चीन के नौसैन्य राष्ट्रवाद का अभिन्न अंग है। चीन के पड़ोसी जैसे जापान, दक्षिण कोरिया, ब्रूनेई ,इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, ताइवान, वियतनाम, थाईलैंड का मानना है कि चीन उनके भूभागीय दावों का सम्मान नहीं करता है। पूर्वी चीन सागर और दक्षिण चीन सागर के यह द्वीप रणनीतिक महत्व के साथ–साथ ऊर्जा के संभावित स्रोत एवं मत्स्यन के विशाल भंडार भी हैं। दक्षिणी चीन सागर को प्रशांत महासागर का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। यह द्वीप चीन की राष्ट्रीय सुरक्षा में अग्रिम पंक्ति का महत्व रखते हैं। चीन इन द्वीपों की संप्रभुता पर अपना अधिकार चाहता है। जिसका आधार चीन का इतिहास है। चीन पूर्वी चीन सागर एवं दक्षिणी चीन सागर के द्वीपों पर अपना पूर्ण नियंत्रण एवं एकाधिकार की स्थापना हेतु सैन्य प्रयोग के विकल्प पर भी बल देता रहा है। चीन पस्चिमीं प्रशान्त क्षेत्र में किसी बाह्य शक्ति की अग्रिम उपस्थिति एवं किसी अन्य राष्ट्र के हस्तक्षेप को अपनी संप्रभुता के लिए खतरा मानता है। इसी को चीन का मुनरो सिद्धांत भी कहा जाता है। चीन पस्चिमी प्रशान्त में अमरीका की अग्रिम उपस्थिति एवं रणनीतिक साझेदारी के विरुद्ध एंटी–एक्सेस एवं एरिया डिनाएल क्षमता में अभिवृद्धि हेतु नौसैन्य आधुनिकीकरण गतिविधियों को संचालित कर रहा है। चीन अमरीका और उसके सहयोगियों की नौसैन्य गतिविधियों पर नज़र रखने हेतु पूर्वी चीन सागर में एयर डिफेंस आइडेंटीफिकेशन ज़ोन – एडिज़ स्थापित कर चुका है। और दक्षिणी चीन सागर में कृत्रिम द्वीपों के निर्माण द्वारा अर्जित अतिरिक्त भूमि पर सैन्य सुविधाएं स्थापित कर रहा है। चीन हिन्द महासागर परिधि क्षेत्र में भी अपनी कमजोर स्थिति के प्रति सतर्क है। चीन का भारत और अमरीका के मध्य बढ़ते रणनीतिक सहयोग पर भी ध्यान केंद्रित है। परंतु हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताएं कुछ भिन्न हैं। चीन का हिन्द महासागर क्षेत्र में किसी राष्ट्र के साथ मैरीटाइम संप्रभुतागत दावों को लेकर कोई विवाद नहीं है। अर्थात हिन्द महासागर के मैरीटाइम सुरक्षा मुद्दे उसके नौसैन्य राष्ट्रवाद का अंग नहीं हैं। परन्तु चीन का भारत के साथ स्थल सीमा विवाद का प्रभाव उत्तरी हिन्द महासागर में मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ता के रूप में प्रकट होता है। हिन्द महासागर चीन के आर्थिक विकास को गति देनें एवं साम्यवादी शासन की वैधता हेतु एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हिन्द महासागर में चीन की प्राथमिकता व्यापारिक नौपरिवहन को अबाधित बनाने और नौपरिवहन की स्वतंत्रता हेतु चोकप्वांट्स और स्लाक्स की सुरक्षा पर केंद्रित है। चीन अदन की खाड़ी, पूर्वी अफ्रीकी तट और मध्यपूर्व से हिन्द महासागर होकर, मलक्का जलसंधि होते हुए, दक्षिणी चीन सागर तक अपनी ऊर्जा और विनिर्मित वस्तुओं की अबाधित आपूर्ति की पहुंच को सरल और सुनिश्चित बनाना चाहता है। चीन भविष्य में किसी भी सम्भावित विवाद की स्थिति में अपने व्यापारिक मैरीटाइम मार्गों की नाकेबंदी या अवरोध के खतरों जैसी स्थिति को लेकर चिंतित है। इसी कारण चीन हिन्द महासागर में अपनी उपस्थिति को बढ़ाकर वह मुख्य एशियाई शक्ति की भूमिका को प्राप्त करना चाहता है। परम्परागत रूप से मैरीटाइम दक्षिण एशिया एक इंडो– डामिनेटेड क्षेत्र माना जाता है। इसलिए चीन की रणनीति हिन्द महासागर में भारत की परम्परागत स्थिति को कमजोर करने पर केंद्रित है। सामान्यतः हिन्द महासागर में चीन की प्राथमिकता ऊर्जा आपूर्ति की रक्षा हेतु पावर प्रोजेक्शन पर केंद्रित है। क्योंकि पूर्वी अफ्रीका और मध्य पूर्व से आयातित ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति सुनिश्चित करना उसके आर्थिक विकास की आरंभिक आवश्यकता है। इसी कारण वह हिन्द महासागर परिक्षेत्र में मोती की माला रणनीति द्वारा हब्बनटोटा (श्रीलंका) चिटगांग (बंग्लादेश) ग्वादर (पाकिस्तान) तिशान्वे, क्योक्प्यु (म्यांमार) में पत्तनों के आधुनिकीकरण के अधिकार अर्जित करके स्वयं का एक लॉजिस्टिक सपोर्ट सिस्टम बना रहा है। चीन एंटी पायरेसी और आतंकवादी गतिविधियों के दमन हेतु सोमालिया के जिबूती में अपना प्रथम नौसैन्य अड्डा स्थापित कर चुका है। हिन्द–प्रशांत के उपक्षेत्रों को लेकर चीन के उद्देश्यों में भी भिन्नता है। जैसे चीन हिन्द महासागर में अपनी ऊर्जा आपूर्ति लाइन को संरक्षित करने का प्रयास कर रहा है। इसके लिए वह पावर प्रोजेक्शन की रणनीति अपना रहा है। परंतु चीन हिन्द महासागर क्षेत्र में संप्रभुतागत नियंत्रण और स्वामित्व नहीं चाहता है जैसा कि वह पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर और ताइवान की खाड़ी में करना चाहता है। परन्तु भारत के साथ अनिर्णित स्थल सीमा विवाद का प्रभाव हिन्द महासागर के मैरीटाइम क्षेत्र में अविश्वास एवं चिन्ताओं को जन्म दे रहा है।

प्रशांत महासागर और हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम चिंताएं अपने स्वरूप में भिन्न हैं। चीन अपनी

तटीय सीमा के निकट पश्चिमी प्रशांत महासागर में संप्रभुतागत मैरीटाइम दावों, मैरीटाइम संसाधनों, मैरीटाइम विवादों और अमेरिका की नौसैन्य उपस्थित को लेकर चिंतित है। वहीं सुदूर के हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन अपने आर्थिक विकास की गति को स्थायी रखने हेतु नौपरिवहन की स्वतंत्रता अर्थात स्लाक्स की सुरक्षा को लेकर चिंतित है। क्योंकि चीन का अधिकतर ऊर्जा आयात एवं विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात हिन्द–महासागर में नौपरिवहन की स्वतंत्रता एवं स्लाक्स की सुरक्षा पर निर्भर है। परिणामस्वरुप जहां पश्चिमी प्रशांत महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा प्राथमिकता अमरीकी प्रभुत्व एवं उपस्थिति को प्रतिस्थापित करना अथवा शून्य करना है। वहीं हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा प्राथमिकता अपनी नौसैन्य उपस्थिति को सुनिश्चित करना एवं भारत के परम्परागत प्रभाव को कम करके उसे अपने प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित करना चाहता है। परिणामस्वरूप पस्चिमी प्रशान्त महासागर में चीन अमरीका के विरुद्ध नौसैन्य प्रतियोगिता में संलिप्त नज़र आ रहा है। वहीं हिन्द महासागर में चीन भारत को घेरने का प्रयास करता नज़र आ रहा है। क्योंकि चीन की पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर में मैरीटाइम गतिविधियां अमरीका की गठबंधन प्रतिबद्धता के विरुद्ध हैं। अमरीका चीन द्वारा निरंतर नौसैन्य शक्ति प्रदर्शन को अपनी नौपरिवहन की स्वतंत्रता के विरुद्ध मानता है। भविष्य में चीन की नौसैन्य क्षमता में अभिवृद्धि के साथ वह दक्षिणी चीन सागर के निकट की स्लाक्स को बाधित कर सकता है। वहीं हिन्द महासागर में मोती की माला रणनीति के अन्तर्गत चीन की बढ़ती उपस्थिति को भारत अपने राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के विरुद्ध मानता है। क्योंकि भारत एवं चीन एक लंबे समय से विद्यमान स्थल सीमा विवाद के कारण अविश्वास का सामना कर रहे हैं। क्योंकि चीन का नौसैन्य आधुनिकीकरण कार्यक्रम एक नील जल सेना के निर्माण पर केंद्रित है जो निकट समुद्र में अपने संप्रभुतागत मैरीटाइम दावों की रक्षा हेतु छोटे युद्ध लड़ और जीत सके और पूर्वी एशिया से सुदूर के मैरीटाइम क्षेत्र हिन्द महासागर में अपने महत्वपूर्ण नौपरिवहन मार्गो अर्थात स्लॉक्स को सुरक्षित करने हेतु नौसैन्य शक्ति का प्रदर्शन कर सके। चीन की गो–ग्लोबल की रणनीति अपनी तटीय सीमा से सुदूर के समुद्री क्षेत्रों जैसे हिन्द महासागर क्षेत्र में समुद्र संरक्षण की नीति को क्रियान्वित कर रहा है। चीन अपने वैश्विक आर्थिक हितों, आर्थिक निवेशों, वैश्विक अभियानों के लिए आवश्यक एक सपोर्ट सिस्टम विकसित कर रहा है। और अपनी मज़बूत सैन्य उपस्थिति को बढ़ा रहा है।

जहां तक पश्चिमी प्रशांत महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताओं का प्रश्न है। चीन की निकट समुद्र में मैरीटाइम में महत्वाकांक्षा अमरीका और उसके पूर्वी एशिया के रणनीतिक गठबंधन सहयोगियों के हितों एवं सुरक्षा को बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है। क्योंकि चीन पूर्वी चीन सागर (सेनकाकू और दियाआऊ) और दक्षिणी चीन सागर (स्प्रैटले और पैरासेल) के अधिकांश भाग को अपनी संप्रभुतागत मैरीटाइम भूभाग का अभिन्न अंग मानता है। चीन इन क्षेत्रों में अपने मैरीटाइम अधिकारों एवं हितों को त्याग नहीं सकता है। क्योंकि चीन में साम्यवादी दल के शासन की वैधता चीन के नौसैन्य राष्ट्रवाद पर टिकी है। ताइवान का राष्ट्रीय एकीकरण चीन की आन्तरिक साम्यवादी राजनीति में एक बड़ा भावनात्मक मुद्दा है। चीन पस्चिमी प्रशान्त में स्थित पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर, ताइवान की खाड़ी इत्यादि में जापान, ब्रूनेई, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, वियतनाम, ताइवान किसी के मैरीटाइम दावों को स्वीकार नहीं करता है। चीन के मैरीटाइम दावे चीन के प्राचीन इतिहास से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। चीन की ऐतिहासिकता उसे अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रावधानों को नज़रंदाज़ करने को प्रेरित करती है। चीन पूर्वी चीन सागर और दक्षिणी चीन सागर के क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर अपना असीमित दावा प्रस्तुत करता है। चीन प्रथम द्वीप समूह के अन्तर्गत अमरीका की नौपरिवहन स्वतंत्रता के दावे को स्वीकार नहीं करता है। वह जापान, दक्षिण कोरिया और थाईलैंड में अमरीका की सैन्य उपस्थिति को अपने हितों के विरुद्ध मानता है। प्रथम द्वीप समूह के अंतर्गत अमरीका की नौसैन्य उपस्थिति को शून्य करना चाहता है। अथवा अमरीका की उपस्थिति को प्रतिस्थापित करके इसे अपने प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित करना चाहता है। चीन की शक्ति में वृद्धि के साथ चीन की मैरीटाइम परिधि के निकट के देशों ने जहां एक ओर अपने नौसैन्य आधुनिकीकरण कार्यक्रम को गति प्रदान की है। वहीं दूसरी ओर चीन की शक्ति को संतुलित करने हेतु अमरीका से रणनीतिक साझेदारी में विस्तार भी किया है। परन्तु चीन की पस्चिमी प्रशान्त महासागर में बढ़ती आक्रामकता एवं नौसैन्य शक्ति का प्रर्दशन अमरीका पर उसके रणनीतिक गठबंधन सहयोगियों (जापान, फिलिपींस, ताइवान) के साथ सम्पन्न संधियों के उल्लंघन का खतरा उत्पन्न करती हैं। पूर्वी एशिया के अमरीकी गठबंधन सहयोगियों में अमरीकी गठबंधन प्रतिबद्धता पर विश्वास में कमी उत्पन्न हो रही है। क्योंकि यह देश बहुत लम्बे समय से चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित करने हेतु अमरीका के साथ रणनीतिक साझेदारी के उपाय

को प्राथमिकता देते रहे हैं। चीन लगातार पूर्वी चीन सागर के सेंकाकू व दियाआऊ और दक्षिणी चीन सागर के पैरासल एवं स्प्रैटले पर अपने संप्रभुतागत दावों को मजबूत करने हेतु अनेक गतिविधियां संचालित कर रहा है जैसे एडीज़, कृत्रिम द्वीप निर्माण, ऊर्जा चिन्हीकरण के प्रयास, अति मत्स्यन, कोस्ट गार्ड, मैरीटाइम मिलेशिया द्वारा अन्य राष्ट्रों की नौपरिवहन की स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न करता है। दक्षिणी चीन सागर में स्थित स्लाक्स पर दक्षिण कोरिया, जापान की अर्थव्यवस्था आश्रित है। पूर्वी चीन सागर ऊर्जा एवं मत्स्य संसाधनों की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। पूर्वी चीन सागर प्रशांत महासागर में चीन के प्रवेश को संभव बनाता है। चीन की राष्ट्रीय सुरक्षा में पूर्वी चीन सागर अग्रिम पंक्ति का महत्व रखता है। पूर्वी चीन सागर उत्तर पूर्व के नौपरिवहन पर चीन के नियंत्रण को साकार करेगा। परंतु चीन जापान को दबाने हेतु सक्रिय नहीं है। क्योंकि जापान में अमरीकी सेना की उपस्थिति है। परन्तु पूर्वी चीन सागर में चीन की गतिविधियां प्रदर्शित करती हैं कि शांतिकाल की इस प्रतिस्पर्धा के स्थायित्व का अंत कभी भी हो सकता है। पूर्वी चीन सागर में चीन की रुचि का एक अन्य प्रमुख कारण उसका ताइवान से निकट होना भी है। यदि चीन पूर्वी चीन सागर में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेता है। तब वह ताइवान की खाड़ी में होने वाले युद्ध में अमेरिकी के हस्तक्षेप को रोक सकता है। सी जिनपिंग के नेतृत्व में निरंतर ताइवान को चीन की मुख्य भूमि में एकीकरण की बात दोहराई जाती रही है। क्योंकि ताइवान के एकीकरण का मुद्दा चीन के स्वप्न रिज्यूविनेशन ऑफ चाइनीज़ नेशन का अभिन्न अंग है।

चीन के नौसैन्य आधुनिकरण का मुख्य उद्देश्य अपने तट के निकट के मैरीटाइम क्षेत्र को अपने प्रभाव क्षेत्र में परिवर्तित करने की क्षमता निर्माण पर केंद्रित है। शांति काल में चीन के नौसैन्य आधुनिकीकरण का पहला उद्देश्य विरोधी देशों को अपने पक्ष में मोड़ने हेतु बाधित करने की क्षमता अर्जित करना है। वहीं अंतिम उद्देश्य उसे युद्ध में पराजित करना है। चीन अपने मैरीटाइम दावों के रक्षण हेतु शक्ति के प्रर्दशन एवं शक्ति के प्रयोग की महत्वाकांक्षा रखता है। जैसे चीन के मैरीटाइम सर्विलांस सिस्टम ने वियतनाम के मत्स्य बोट को पैरासिल द्वीप के निकट डुबो दिया गया था। पूर्वी चीन सागर एवं दक्षिणी चीन सागर में चीन की प्राथमिकताएं अमेरिका और उसके सहयोगियों के लिए आपत्तिजनक हैं। क्योंकि इन गतिविधियों का उद्देश्य विवादित मैरीटाइम क्षेत्र में अपने दावे को मजबूत करना और अंततः अपने प्रभुत्व की स्थापना करना है। परन्तु चीन सदैव ही सैन्य कार्यवाही का पक्षधर नहीं है। वह सॉफ्ट पावर के प्रयोग की रणनीति को भी बढ़ावा दे रहा है। अर्थात विरोधी दावेदारों को अपने पक्ष में करने हेतु चीन आर्थिक प्रलोभन, असैन्य टूल्स का प्रयोग भी करता है। जैसे सेंकाकू द्वीप में जापानी कोस्टगार्ड्स की मत्स्यन हेतु परिवहन ट्रिप की गतिविधि के विरुद्ध चीन के द्वारा आर्थिक दबाव को एकसाधन प्रयुक्त किया जा चुका है। चीन के विरूद्ध पूर्वी एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया के देश एसियान के नेतृत्व में एक इकाई के रूप में एकत्र होते हैं। परंतु चीन की मजबूत आर्थिक उपस्थिति उन्हें अलग–थलग कर देती है। वियतनाम दक्षिणी चीन सागर में चीन के मैरीटाइम दावों के विरुद्ध कड़ाई से खड़ा है। जबकि थाईलैंड और मलेशिया चीन के मैरीटाइम दावों के विरुद्ध सुरक्षित घेरे में रहकर ही अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। चीन से आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु कम्बोडिया और फिलीपींस अपने मैरीटाइम दावों को एक किनारे करके नरमीं प्रदर्शित कर रहे हैं। चीन बी० आर० आई० के अंतर्गत दक्षिण पूर्वी एशिया के राष्ट्रों को एक बड़ी आर्थिक सहायता दे रहा है। चीन इन राष्ट्रों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करने हेतु आधारभूत संरचना विकास हेतु आर्थिक मदद के बड़े–बड़े दावे कर रहा है। परिणाम स्वरुप आर्थिक सहायता प्राप्त करने वाले राष्ट्र सार्वजनिक रूप से खुलकर चीन का विरोध नहीं कर रहे हैं। चीन दक्षिणी चीन सागर विवाद को हल करने हेतु एशियाई देशों के साथ कोड आफ कंडक्ट पर लंबी वार्ताएं कर चुका है। चीन पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर एवं ताइवान की खाड़ी में अपने मैरीटाइम भूभागीय दावों एवं मैरीटाइम सुरक्षा प्राथमिकता एवं महत्वाकांक्षा को एक नरेटिव से आकर देता रहा है। अपने मैरीटाइम परिधि के राष्ट्रों को आश्वस्त करता रहा है कि उसके नौसैन्य आधुनिकरण के प्रयास अपने मैरीटाइम दावों हेतु मात्र रक्षात्मक प्रयास हैं। चीन अपनी आयातित ऊर्जा आपूर्ति, विनिर्मित वस्तुओं की निर्यात आपूर्ति हेतु दक्षिणी चीन सागर से गुजरने वाले स्लाक्स की सुरक्षा हेतु यह सब कुछ कर रहा है। चीन ने ए०डी०आई०ज़ेड०, वायु सुरक्षा कवच और कृत्रिम द्वीप पर सैन्य तैनाती इसी उद्देश्य से की है। स्प्रैटले द्वीप के निकट मिश्चीफ रीफ़ पर एंटी क्रूज़ मिसाइल की तैनाती से चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।

चीन पस्चिमीं प्रशान्त क्षेत्र में बाह्य शक्तियों जैसे अमेरिकी प्रभुत्व और वियतनाम के निकट भारत की बढ़ती गतिविधियों को प्रथम दीप समूह से बाहर करके इस क्षेत्र को एक सुरक्षात्मक बफर क्षेत्र बनाना चाहता है। परन्तु

यदि चीन ऐसा संभव कर लेता है तो अमेरिका के लिए अपने सहयोगियों को युद्ध की स्थिति में सहायता कर पाना संभव नहीं होगा। चीन ताइवान के मुद्दे पर चीन के विरुद्ध अमेरिका की संभावित प्रतिरोध को असफल करने की क्षमता से युक्त बनना चाहता है। चीन ताइवान के एकीकरण में संभावित युद्ध लागत को कम करना चाहता है। चीन नौसैन्य आधुनिकरण द्वारा दूसरी बाह्य शक्तियों की क्षमता के विरुद्ध एक प्रतिरोधी क्षमता का निर्माण करना चाहता है। चीन इस क्षेत्र में युद्ध या अशांति के समय स्लाक्स की सुरक्षा को प्रभावी बनाना चाहता है ताकि स्लाक्स को कोई बाधित न कर सके। चीन ताइवान पर आक्रमण की स्थिति में उसके विरुद्ध अमेरिका की प्रतिकार योग्यता को शून्य करना चाहता है। इसी कारण वह पश्चिमी प्रशांत में एंटी–एक्सेस और एरिया–डेनायल (ए–टू एवं ए–डी) क्षमता में अभिवृद्धि कर रहा है। ताकि अमेरिका की संभावित प्रतिक्रिया की पहुंच को नकार सके और त्वरित प्रतिकार को देरी में परिवर्तित कर सके। दक्षिणी चीन सागर में प्रीस्टले द्वीप के निकट मिसचीफ रीफ़ और रूबी रीफ़ पर कृत्रिम द्वीप का निर्माण उसे दक्षिणी चीन सागर के निकट अतिरिक्त भूमि उपलब्ध कराक मिसाइल और सर्विलांस तकनीक हेतु अतिरिक्त प्लेटफार्म उपलब्ध कराती है। चीन अपने मैरीटाइम भूभागीय दावों एवं नौसैन्य महत्वाकांक्षाओं की वैधता हेतु यूएनक्लास के विभिन्न प्रावधानों की मनमानी व्याख्या भी करता है। अंतरराष्ट्रीय कानूनों को गलत ढंग से लागू करता है। चीन ने पूर्वी चीन सागर में 2013 में ए०डी०आई०ज़ेड० की स्थापना जापान, दक्षिण कोरिया और ताइवान की मैरीटाइम सीमा का उल्लंघन है। चीन दक्षिणी चीन सागर में भी ए०डी०आई०ज़ेड० को स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। चीन द्वारा लगातार अपने मैरीटाइम पड़ोसियों के विशेष आर्थिक क्षेत्र में सैन्य गतिविधियों को संचालित करना अंतरराष्ट्रीय कानून की उपेक्षा है। चीन के मैरीटाइम भूभागीय दावे यूएनक्लास पर आधारित न होकर अपने स्वरूप में ऐतिहासिक हैं। मैरीटाइम पड़ोसियों के विशेष आर्थिक क्षेत्र में ऊर्जा संसाधनों की खोज गतिविधियां संचालित करना, अति मत्स्यन, तकनीक आधारित मत्स्यन अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है। स्प्रैटले के निकट कृत्रिम द्वीप का निर्माण 12 नॉटिकल मील सीमा का उल्लंघन है।

जहां तक हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताओं का प्रश्न है। चीन के मौजूदा नेतृत्व ने वैश्विक आर्थिक हितों के संरक्षण हेतु गो– ग्लोबल अथवा सुदूर समुद्र संरक्षण की रणनीति की उद्घोषणा की है। इस रणनीति के अन्तर्गत चीन की मैरीटाइम प्राथमिकता निकट तटीय सीमा से सुदूर हिन्द महासागर तक विस्तारित हुई है। चीन के 2019 के श्वेत रक्षा प्रपत्र में भी नौसैन्य आधुनिकीकरण के रणनीतिक स्वरूप में परिवर्तन के संकेत दिए गए हैं। चीन ने अपनी नौसेना को निकट समुद्री नौसेना से सुदूर समुद्र संरक्षण नील जल सेना में परिवर्तित करने की उद्घोषणा भी की है। यद्यपि चीन द्वारा पहली बार अपनी नौसेना को 2008 में पायरेसी के विरुद्ध वैश्विक अभियान में सहयोग प्रदान करने हेतु अदन की खाड़ी में तैनात किया था। लेकिन सी जिनपिंग ने पहली बार सुदूर समुद्र में गैर–परंपरागत मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों (पायरेसी, आतंकवाद, स्मगलिंग, ऊर्जा आपूर्ति, नान–स्टेट एक्टर्स) से अपने मैरीटाइम अधिकारों एवं हितों की सुरक्षा को संप्रभुतागत अधिकारों, भूभागीय अखंडता की चुनौतियों के समकक्ष घोषित किया गया है। स्लाक्स और चोकप्वांइट्स को लेकर होने वाले विवाद को चीन की राष्ट्रीय संप्रभुता के समक्ष संकट के समान चुनौती घोषित कर दिया गया। अदन की खाड़ी, फारस की जलसंधि और मलक्का जलसंधि के महत्त्व को रेखांकित करते हुए हु जिन्ताओ द्वारा मलक्का की दुविधा की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया। चीन अपने आयातित ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति (मध्यम पूर्व और अफ्रीका) पर आश्रित है। चीन के ऊर्जा संसाधनों एवं विनिर्मित वास्तुओं की वैश्विक आपूर्ति को गैर परंपरागत सुरक्षा चुनौतियों से रक्षा हेतु प्रतिबद्धता के कारण सुदूर समुद्र रक्षण की नीति को अपनाया गया है। चीन का मध्य पूर्व एवं अफ्रीका से आने वाला तेल एवं गैस अरब सागर से होते हुए उत्तरी हिंद महासागर के रास्ते मलक्का जलसंधि होते हुए दक्षिणी चीन सागर के रास्ते चीन की मुख्य भूमि तक पहुंता है। परंपरागत रूप से अमेरिका को इन वैश्विक स्लाक्स और चोकप्वांट्स का संरक्षक माना जाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्लाक्स हिन्द–प्रशांत क्षेत्र से होकर गुजरती हैं। दुनिया का एक तिहाई मैरीटाइम ट्रैफिक इसी क्षेत्र में है। चीन की 80: ऊर्जा आपूर्ति इन्हीं नौपरिवहन मार्गों से होकर गुजरता है। चीन इन स्लाक्स से अपनी नौपरिवहन की पूर्ण स्वतंत्रता को सुनिश्चित बनाने हेतु चिंतित है। चीन की संपूर्ण आर्थिक गतिविधियां और उसकी आर्थिक संवृद्धि इन्ही स्लाक्स और चौकप्वाइंट्स की सुरक्षा पर निर्भर है।और इन स्लॉक्स और चौक पॉइंट्स की सुरक्षा हेतु चीन अमेरिका पर पूरी तरह निर्भर है। अमरीका एक लम्बे समय से चीन के उदय के सीमितिकरण का प्रयास कर रहा है। चीन के आर्थिक विकास की गति चीन के साम्यवादी दल के वैधता की एक

बड़ी गारंटी है। चीन इस आंशका से ग्रस्त हैं कि अमरीका उसकी आंतरिक राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास की गति को भंग करने हेतु इन स्लाक्स/नौ परिवहन मार्गों को बाधित करके उसे शेष विश्व से काट सकता है। संप्रभुत्तागत विवाद के कारण अथवा ताइवान के एकीकरण को लेकर होने वाले संभावित युद्ध की स्थिति में अमरीका अपने सहयोगियों की सहायता के अंग के रूप में मलक्का जलसंधि पर आश्रित आपूर्ति की नाकेबंदी कर सकता है। इसी कारण चीन अपनी आयात और निर्यात की गतिविधियों को निर्बाध बनाने हेतु मलक्का जलसंधि के विकल्प को तैयार करने की रणनीति के अंग के रूप में दक्षिणी पूर्वी और दक्षिणी पश्चिमी चीन की मुख्य भूमि से हिन्द महासागर तक अपनी सीधी पहुंच सुनिश्चित करने के व्यहारिक प्रयासों को क्रियान्वित कर चुका है।

हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताएं अपने स्वरूप में संप्रभुतागत दावों पर आश्रित न होकर केवल आर्थिक हैं। अर्थात हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती नौसैन्य उपस्थिति और नौसैन्य गतिविधियों के पीछे मुख्य कारण आर्थिक गतिविधियों को गैर–परंपरागत मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों से रक्षण पर केन्द्रित हैं। चीन की निकट समुद्र और सुदूर समुद्र की मैरीटाइम रणनीति में एक मुख्य अंतर यह है कि वह सुदूर हिन्द महासागर में अपनी नौपरिवहन की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करना चाहता है। परंतु निकट समुद्र के विपरीत सुदूर हिन्द महासागर में वह किसी दूसरे राष्ट्र की नौपरिवहन स्वतंत्रता को बाधित नहीं करना चाहता है। प्राथमिक रूप से सुदूर समुद्र क्षेत्र में चीन अपनी स्लाक्स के संरक्षण की इच्छा पर आश्रित है। जिससे उसकी अर्थव्यवस्था की गतिविधियां बाधित न हो क्योंकि चीन में साम्यवादी शासन की वैधता उसके आर्थिक प्रदर्शन पर आधारित है। अतः सुदूर समुद्र में चीन का उद्देश्य संप्रभुतगत न होकर आर्थिक है। वैश्विक अर्थव्यवस्था से पूर्णतरू एकीकरण के परिणामस्वरूप आज चीन के आर्थिक हित विश्वव्यापी हो गये हैं। हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के तटीय क्षेत्रों में स्थित राष्ट्र चीन की निर्यात उन्मुख अर्थव्यवस्था के लिए बड़े बाज़ार हैं। चीन के निर्यात में मध्यपूर्व, पस्चिमी हिन्द महासागर, उत्तरी हिन्द महासागर के निकट के छोटे देशों की बड़ी आर्थिक एवं सैन्य हिस्सेदारी है। चीन के आयात में मध्यपूर्व,अफ्रीका के प्राकृतिक एवं ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता है। चीन की राज्य स्वामित्व वाली फर्म ओवरसीज़ परिचालन कर रही हैं। उनका हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के राष्ट्रों में भारी निवेश है। दो मिलियन से अधिक चीन के लोग ओवरसीज़ कार्य कर रहे हैं। बी०आर०आई० के अंतर्गत चीन के आधारभूत संरचना निर्माणतंत्र हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में फैला है। सीपैक, सीमैक,चीन–म्यामांर गैस पाइपलाइन और मोती की माला रणनीति के तहत पूर्वी, उत्तरी, पस्चिमी हिन्द महासागर में जिबूती(सोमालिया),ग्वादर (पाकिस्तान) हंबनटोटा (श्रीलंका) चिटगांग (बंगलादेश) क्योक्प्यु (म्यांमार) इत्यादि इन सभी पत्तनों पर अपनी उपस्थिति को मजबूत और स्थायी बना रहा है। चीन निरन्तर स्पष्ट करता रहा है कि इन पत्तनों का उद्देश्य व्यापारिक और लाजिस्टिक्स सपोर्ट प्वाइंट्स के रूप में है। परंतु भविष्य में इनके नौसैन्य प्रयोग की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। चीन कहता है कि इनका उद्देश्य मैरीटाइम व्यापारिक मार्गों अर्थात स्लाक्स के संरक्षण पर केंद्रित है।

हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ता और नौसैन्य क्षमता में एक महत्वपूर्ण द्वंद्व है। यह आशंकाओं, चुनौतियों एवं प्राथमिकताओं से युक्त है। क्योंकि चीन अपने तट से सुदूर समुद्र संरक्षण के दावों की पूर्ति बिना नील जल सेना क्षमता अर्जित एवं संवर्धित किये नहीं कर सकता है। चीन का नील जल सेना का दावा बिना लम्बी दूरी के वायु सुरक्षा तंत्र, वायुयान वाहक जहाज़, बड़े युद्धपोत के बिना पूर्ण नहीं हो सकता है। क्योंकि चीन को सुदूर समुद्र में किसी भी नौसैन्य अभियान को संचालित करने हेतु व्यापक लॉजिस्टिक्स सपोर्ट्स, रिसप्लाई और मेंटेनेंस सुविधा अनीवार्य है। इसी कारण चीन पूर्वी अफ्रीकी तट, अरब सागर, उत्तरी हिन्द महासागर, पश्चिमी हिन्द महासागर और पूर्वी हिन्द महासागर में निरंतर इन सुविधाओं का विस्तार कर रहा है। हिन्द महासागर के तटीय देशों अर्थात मैरीटाइम दक्षिण एशियाई राष्ट्रों को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने का प्रयास कर रहा है। और दक्षिण एशिया के परम्परागत शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है। चीन बी० आर० आई० के अन्तर्गत आधारभूत संरचना विकास हेतु व्यापक आर्थिक सहायता के माध्यम से इनको अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने का प्रयास कर रहा है। चीन इन सभी राष्ट्रों में लम्बे समय से सैन्य आपूर्तिकर्ता की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। चीन के बाहरी व्यापार में इन राष्ट्रों की बड़ी हिस्सेदारी है। यह सभी आर्थिक एवं सैन्य संसाधनों के लिए चीन पर पूर्णतः निर्भर हैं। चीन साफ्टपावर डिप्लोमेसी और डेब्ट ट्रैप्ड डिप्लोमेसी के अंतर्गत उत्तरी हिन्द महासागर में भारत के प्रभाव को कम कर रहा है। उत्तरी हिन्द महासागर को अपने प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित कर रहा है।

मैरीटाइम दक्षिण एशिया का यह क्षेत्र परम्परागत रूप से एक भारत केंद्रित एवं भारत प्रभावित क्षेत्र है। भारत उत्तरी हिन्द महासागर में भौगोलिक लाभ की स्थिति में है। भारत लम्बे समय से दक्षिण एशिया में नेट सेक्युरिटी प्रोवाइडर की भूमिका का निर्वहन करता आ रहा है। परन्तु भारत और चीन के बीच भूमि सीमा विवाद एक लम्बे समय से अनिर्णित है। डोकलाम जैसी घटनाएं 1962 के युद्ध की यादों को ताज़ा कर देती हैं। भारत को आशंका है कि भारत और चीन के बीच स्थलीय सीमा विवाद का प्रभाव उत्तरी हिन्द महासागर के मैरीटाइम क्षेत्र में प्रतिद्वंदिता और प्रतिस्पर्धा के रूप में परिवर्तित हो सकता है। भारत को आशंका है कि चीन मैरीटाइम दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन को अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है। भारत को आशंका है कि उत्तरी हिन्द महासागर में चीन की मैरीटाइम प्राथमिकता हिन्द महासागर के तटीय राष्ट्रों को भारत से अलग–थलग कर देने की है। हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती नौसैन्य गतिविधियों को लेकर भारत में चिंता है कि उत्तरी हिन्द महासागर में चीन भारत को चारों ओर से घेरने का प्रयास कर रहा है। चीन भूमि सीमा विवाद के कारण संभावित युद्ध की स्थिति में उत्तरी हिन्द महासागर में अपनी नौसैन्य उपस्थिति को प्रयुक्त कर सकता है। आरम्भ में चीन निकट समुद्र क्षेत्र में नौसैन्य गतिविधियों को प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त नौसैन्य क्षमता निर्माण का प्रयास कर रहा था परन्तु हाल के दिनों में चीन अपनी नौसेना को विश्वस्तरीय नौसेना में परिवर्तित करने एवं नौसेना में व्यापक सुधार और आधुनिकीकरण की गति को तीव्र करने पर केंद्रित है जिसका उद्देश्य नौसेना को नील जल सेना में परिवर्तित करना है। अर्थात नौसेना को सुदूर गहरे समुद्र के अभियानों हेतु तैयार करना हो गया है।

चीन का श्वेत सुरक्षा प्रपत्र 2015 प्रदर्शित करता है कि चीन की मैरीटाइम सुरक्षा रणनीति अब निकट समुद्र सक्रिय सुरक्षा से सुदूर समुद्र संरक्षण में परिवर्तित हो गयी है। वैश्वीकरण के परिणाम स्वरुप वैश्विक अर्थव्यवस्था से एकीकरण के बाद चीन ने गो–ग्लोबल रणनीति के अन्तर्गत विकसित वैश्विक आर्थिक हितों की रक्षा हेतु सुदूर गहरे समुद्र ऑपरेशन संचालित करने के लिए निरंतर अपनी क्षमताओं में अभिवृद्धि की है। चीन सुदूर क्षेत्र में अपने आर्थिक निवेश की रक्षा करने हेतु गहरे समुद्र में शक्ति के प्रर्दशन क्षमता मे विस्तार पर व्यवहारिक प्रयास किए हैं। इसका मुख्य कारण मध्य पूर्व से आने वाले आयातित ऊर्जा संसाधन की रक्षा है। अफ्रीका में अपने ऊर्जा निवेश की सुरक्षा करना है। बी०आर०आई० के अधीन आधारभूत संरचना ढांचे की संभावित सुरक्षा करना है। चीन निकट समुद्र में भी संभावित ऊर्जा संसाधनों की उपस्थिति से संबंधित उत्खनन के प्रयास पूर्वी चीन सागर, दक्षिणी चीन सागर में कर रहा है। ताकि बाहरी ऊर्जा निर्भरता को कम किया जा सके। चीन सीपैक और सीमैक प्रोजेक्टस के द्वारा अपने दक्षिण पूर्वी और उत्तरी पस्चिमी क्षेत्रों की हिन्द महासागर तक सीधी भूमि पहुंच सुनिश्चित कर चुका है। मलक्का दुविधा के निवारण हेतु म्यांमार से युन्नान प्रान्त तक और ग्वादर से सिंजियांग प्रान्त तक ऊर्जा पाइपलाइन निर्मित कर चुका है। सुदूर समुद्र संरक्षण का उद्देश्य चीनी नागरिकों को आपातकाल में इवैक्युएट करने हेतु सुदूर शक्ति प्रर्दशन की क्षमता में अभिवृद्धि करना है। चीन की सबसे बड़ी चिन्ता गैर परंपरागत सुरक्षा चुनौतियों का शमन करना है। चीन फारस की खाड़ी और अदन की खाड़ी से होकर अरब सागर, हिन्द–महासागर, मलक्का जलसंधि, दक्षिणी चीन सागर तक उपलब्ध स्लाक्स की सुरक्षा को सुनिश्चित बना रहा है। ताकि तेल एवं गैस की निर्बाध आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जहां पस्चिमी प्रशान्त महासागर में चीन की प्राथमिकता अपनी मैरीटाइम परिधि के चारों ओर शक्ति का प्रदर्शन करना है। वहीं हिन्द महासागर में अपनी नौपरिवहन की स्वतंत्रता के लिए स्लाक्स के संरक्षण हेतु आवश्यक समर्थन सुविधा विकसित करना है। इसी को चीन की दो–महासागर की रणनीति कहा जाता है। हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती मैरीटाइम महत्वाकांक्षा के विरुद्ध निकट समुद्र और सुदूर समुद्र क्षेत्र के राष्ट्रों को मिलकर मैरीटाइम सुरक्षा चुनौतियों का उन्नत समाधान खोजना होगा। हिन्द महासागर की भौगोलिक स्थिति उसे पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी बनाती है। अर्थात मध्यपूर्व, अफ्रीका और युरोप को प्रशान्त महासागर से जोड़ने में हिन्द महासागर में स्थित स्लाक्स की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिन्द प्रशान्त की अवधारणा में हिन्द महासागर केन्द्रीय भूमिका में आ गया है। क्योंकि वैश्विक व्यापारिक आपूर्ति के पूर्व से पश्चिम के महत्वपूर्ण नौपरिवहन मार्ग अर्थात स्लाक्स उत्तरी हिन्द–महासागर से ही गुजरते हैं। वैश्विक समुद्र आधारित व्यापार और ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति फारस की खाड़ी और अदन की खाड़ी से होकर उत्तरी हिंद महासागर, मलक्का–जलसंधि, दक्षिणी चीन सागर से होकर प्रशांत–महासागर तक पहुंचते हैं। विशाल आकार और केंद्रीय भौगोलिक स्थिति के कारण हिन्द महासागर भारत के परंपरागत प्रभाव क्षेत्र में परिवर्तित हो गया है। भारत की भौगोलिक स्थिति उसे हिन्द महासागर में अरब सागर और बंगाल की

खाड़ी दोनों ओर से आसान पहुंच सुनिश्चित करती है। उत्तर में हिमालय का प्राकृतिक अवरोध और दक्षिण में हिन्द महासागर भारत को एक भौगोलिक लाभ की स्थिति उपलब्ध कराता है कि वह क्षेत्र में रणनीतिक प्रभुत्व को प्राप्त कर ले और सम्पूर्ण दक्षिण एशिया उस पर निर्भर बन जाए। इसी को भारत का मुनरो सिद्धांत भी कहा जाता है। परन्तु पाकिस्तान उत्तरी हिन्द महासागर के शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण कारक है। जो एक ओर पाकिस्तान–चीन धुरी और दूसरी ओर भारत से अनेक भूमि– विवाद के कारण महत्वपूर्ण बन जाता है। हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में चीन की मैरीटाइम सुरक्षा प्राथमिकता के अंतर्गत स्लाक्स की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसके अतिरिक्त दक्षिण एशिया के राष्ट्रों को सैन्य उत्पादों की आपूर्ति, दक्षिण एशिया के विशाल बाजार में चीन के विनिर्मित सामान की आपूर्ति और पश्चिम के देशों को विनिर्मित सामानों की आपूर्ति के कारण हिन्द महासागर पहले से ही महत्वपूर्ण रहा है। चीन द्वारा बी०आर० आई० और एम०एस०आर०आई० के अंतर्गत पश्चिम की ओर व्यापार नेटवर्क की स्थापना, स्लाक्स के सहारे कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट, समुद्री पत्तनों का आधुनिकीकरण, चीन के दक्षिणी एवं पश्चिमी प्रान्तों की हिन्द महासागर तक भूमि पहुंच सुनिश्चित करने, मलक्का दुविधा के निवारण हेतु वैकल्पिक भूमि मार्गों की स्थापना और ऊर्जा आपूर्ति ढांचे का निर्माण इत्यादि इन सभी गतिविधियों को भारत आपत्तिजनक मानता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. Bateman, Sam. (2012) Maritime Challenges and Priorities in Asia (1st ed) Routledge London and New York.
2. Ball, Desmond. (1996) The Transformation of Security in the Asia. Pacific Region(1st.ed) Frank Cass London.
3. Auslin, R. Michael. (2020) Asia's New Geopolitics : Essays on Reshaping the Indo. Pacific (1st.ed) Hoover Institute Press California.
4. Doyle, Randall. (2009) Geography, Hegemony and Politics in Asia. Pacific (1st.ed) University Press of America New York.
5. Zara, Raymond. Catherine. (2005) Maritime Security in the Asia.Pacific (1st.ed) Institute of Defense and Strategic Studies Singapore.
6. Chung, Peng. Chien. (2010) China's Multilateral Cooperation in Asia and the Pacific (1st.ed) Routledge London and New York.
7. Lavigne, Philippe (2012) Regional Perspectives Report on The Indo.Pacific (1st.ed) NATO NORFOLK Virginia.
8. Cliff, Roger (2020) A New U.S. Strategy For The Indo.Pacific (1st.ed) National Bureau of Asian Research Seattle.
9. Prabhakar, W. Lawrence (2006) The Evolving Balance of Power in the Asia.Pacific (1st.ed) Institutenstitute of Defense and Strategic Studies Singapore.
10. Singh, Swaran. and Marwah, Reena.(2023) Multilateralism in the Indo.Pacific : Conceptual and Operational Challenges (1st.ed) Routledge London and New York.
11. Mahnken, G. Thomas. (2018) The Gathering Pacific Storm : Emerging US.China Strategic Technological and Industrial Development (1st.ed) Cambria Press Amherst New York.
12. Ayson, Robert. Ball, Desmond.(2006) Strategy and Security in the Asia.Pacific (1st.ed) Southwood Press Sydney.
13. Êang Biwu (2012) Chinese Perception of the U.S: An EÛploration of China's Foreign Policy Motivation (2nd.ed) LeÛington Books UK.
14. Swaine, D. Michael. and Tellis, J. Ashley (2000) Interpreting China's Grand Strategy : Past, Present, and Future (2nd.ed) Project Air Force RAND Washington.
15. Nacht, Michael. and Laderman, Sarah. (2018) Strategic Competition in China.US Relation (1st.ed) Center for Global Security Research New York.
16. Tow, T. William. (2009) Security Politics in the Asia. Pacific: A Regional.Global NeÛus (2nd.ed) Cambridge University Press.

17. Yoshihara, Toshi and Holmes, R. James.(2008) Asia Looks Seaward : Power and Maritime Strategy (1st.ed) Praeger Security International Westport London.
18. Êao, Suisheng. China and The United States: Cooperation and Competition in Northeast Asia Palgrave MacMillan UK.
19. Ali, S. Mahmud.(2017) US.Chinese Strategic Triangles: EÛamining Indo.Pacific Insecurity (1st.ed) Springer Malaysia.
20. Ali, S. Mahmud.(2005) US.China Relations in The Asia.Pacific Century (2bd.ed) Palgrave MacMillan New York.
21. Singh, Swaran. and Marwah, Reena.(2023) China and the Indo.Pacific : Maneuvers and Manifestations (1st.ed) Palgrave MacMillan Singapore.
22. Sing, Edward. and Chan Yue (2022) China's Maritime Security Strategy : The Evolution of a Growing Sea Power (1st.ed) Routledge London and New York.
23. Sutter, G. Robert (2012) Chinese Foreign Relations : Power and Policy since Cold War (3rd.ed) Rowman and Littlefield Publishers INC UK.
24. Huang, Hao. Paul.(2010) The Maritime Strategy of China in The Asia.Pacific Region : Origin, Development, and Impact (1st.ed) Edwin Mellen Press Queenston.
25. Malik, Mohan. (2014) Maritime Security Strategy in the Indo.Pacific : Perspective from China, India and the United States (1st.ed) Rowman and Littlefield London.
26. Saunders, C. Phillip. (2011) The Chinese Navy: EÛploring Capabilities, Evolving Roles(1st.ed) National Defense University Press Washington.
27. Holmes, R. James. Yoshihara, Toshi (2008) Chinese Naval Strategy in the 21st Century: The turn to Mahan (2nd.ed) Routledge London and New York.
28. Scobbell, Andrew, and Saunders, C. Phillip.(2021) The PLA Beyond Borders : Chinese Military Operations in Regional and Global ConteÛt (2st.ed) National Defense University Press Washington.
29. Dutton, A. Peter. and Martinson, D. Ryan.(2015) Beyond the Wall : Chinese Far Seas Operations (2st.ed) US Naval War College Newport.
30. Cole, D. Bernard. (2016) China's Quest for Great Power: Ships,Oil, and Foreign Policy (1st.ed) Naval Institute Press Annapolis Maryland.
31. Khoo, Nicholas. and Tan, T.H. Andrew (2022) China's Foreign Policy : The Emergence of a Great Power (2nd.ed) Routledge London and New York.
32. Kapur, Ashok. (2020) Geopolitics and the Indo.Pacific Region (1st.ed) Routledge London and New York.
33. Erickson, S. Andrew. (2012) China's Energy Strategy : The Impact on Beijing's Maritime Policies (1st.ed) Naval Institute Press Annapolis Maryland.
34. Lim, Heng (2014) China's Naval Power : An Offensive Realist Approach (1st.ed) Routledge London and New York.
35. Dinner, K. Lukas (2018) China's Grand Strategy : Contradictory Foreign Policy (1st.ed) Palgrave MacMillan USA.
36. Garver, W. John. (2016) China's Quest : The History of The Foreign Relations of The People's Republic of China (1st.ed) OÛford University Press New York.
37. Khan, Wasif. Sulmaan.(2018) Haunted By Chaos : China's Grand Strategy from Mao to Xi Jinping (1st.ed) Harvard University Press London.
38. Lampton, M. David.(2014) Following the Leader : Ruling China from Deng Xiaoping to Xi Jinping (1st.ed) University of California Press Berkeley.
39. Fewsmith, Joseph (2008) China Since Tiananmen : From Deng Xiaoping to Hu Jintao (2nd.ed) Cambridge University Press London.

40. Chandra, Satish. and Ghoshal, Baladas (2018) The Indo.Pacific AÛis : Peace and Prosperity or Conflict (1st.ed) Routledge London and New York.

Cite this Article-

'मोहम्मद आकिफ तौफीक, डॉ0 शमीम राईन', 'चीन की मैरीटाइम सुरक्षा चिन्ताएंः हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के सन्दर्भ में ' Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:03, March 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i3009
Published Date- 14 March 2025